Annexure VII (AT III (A)
(Page-3) Cont.

नारी जीवन के द्वन्द्व और संघर्ष डॉ. मधु संधु की कहानियों के सन्दर्भ में

डॉ. दीप्ति
सहायक प्रोफेसर, हिन्दू कॉलेज, अमृतसर (पंजाब)

www.shodhshree.com

शोध सारांश

आधी दुनिया यानी स्त्री अपनी संवेदना, जीवन संघर्ष, द्वन्द्व मनोविज्ञान के कारण साहित्य का केन्द्रबिन्दु रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक समाज के परिप्रेक्ष्य में डॉ. मधु संधु की कहानियों के सन्दर्भ में वैश्विक चुनौतियों का सामना करती हुई आधुनिक नारी के जीवन संघर्ष और उपलब्धियों के साकारात्मक रुप को दिखाने का प्रयास किया गया है। 21वी सदी के परिप्रेक्ष्य में नारी अस्मिता, उत्थान एवं आत्मनिर्भरता के साथ-साथ अन्याय का विरोध करती नारी के सशक्त रुप का चित्रण है। यहां सजग आत्म चेता, अत्याधुनिक, बौद्धिक, शिक्षित भारतीय स्त्री का मनोविज्ञान, संघर्ष और विजय यात्रा प्रस्तुत है।

संकेताक्षर : जीवन संघर्ष, द्वन्द्व मनोविज्ञान, महत्त्वाकांक्षी, नारी सशक्तिकरण, संघर्ष और विजय यात्रा।

आधी दुनिया यानी स्त्री अपनी संवेदना, जीवन संघर्ष, द्वन्द्व मनोविज्ञान के कारण साहित्य का केन्द्रबिन्दु
रही है। "भारतीय स्त्री विमर्श का स्वरूप भारतीय साहित्य की लेखिकाओं में वैदिककाल से लेकर
समकालीन युग तक अनवरत रूप से प्राप्त होता है।"[1] पुरातन काल में जहां नारी का संसार घर-परिवार
तक ही सीमित माना जाता था। नारी के कर्त्तव्य मात्र पारिवारिक सदस्यों की सेवा धर्म तक ही सीमित थे परन्तु आधुनिक
युग में नारी ने घर और बाहर के मोर्चे जीतकर अपनी सफलता एवं उपलब्धियों से अपने आलोचकों का मुंह बन्द कर दिया है।
वर्ष 2001 को भारत में महिला सशक्तिकरण के रूप में जहां घोषित किया गया, वहीं प्रत्येक वर्ष आठ मार्च को अर्न्तराष्ट्रीय
महिला दिवस मनाना नारी की दिन-प्रतिदिन सशक्त होती स्थिति का द्योतक है। 'स्त्री विमर्श' आज हिन्दी साहित्यकारों की
चर्चा का महत्त्वपूर्ण विषय है। निर्विवाद रूप से यह प्रमाणित सत्य है कि परमात्मा की सुकोमल रचना नारी आरम्भ से ही
पुरुष की प्रेरणा रही है। पुरुष की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ-साथ माँ, बेटी, बहन, पत्नी रूप में ही
नहीं वल्कि अपनी आत्मिक सुन्दरता से कर्म करने की प्रेरक भी रही है परन्तु नारी को पुरुष के अहं और आर्ष वर्चस्व, प्रभुत्व
से जूझते हुए सदैव अपने अस्तित्व स्थापना के लिए निरन्तर संघर्ष करना पड़ा है। सामाजिक स्वतन्त्रता पाकर भी वह युगीन
विषमताओं से छुटकारा नहीं पा सकी है परन्तु आज सुशिक्षित, आत्मनिर्भर आधुनिक नारी पुरुष प्रधान समाज की स्त्री
विरोधी व्यवस्था, रुढ़ियों व परम्पराओं के विरुद्ध नाकारात्मक मुद्रा में खड़ी है। नारी अपने व्यक्तित्व पर पुरुष द्वारा निरन्तर
प्रहार सहन करती हुई कुछ क्षणों के लिए मानसिक रूप से चाहे निर्बल एवं असमर्थ महसूस करती है परन्तु फिर अपनी
जीजिविषा, अडिग निर्णय एवं संकल्प के बल पर जीवन समर में विजय प्राप्त करती है।
आधुनिक पंजाब के हिन्दी साहित्यकारों ने नारी के अस्तित्व, अस्मिता के बारे में स्वतन्त्र रूप से चिन्तन किया है, जिनमें
बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न डॉ. मधु संधु ने अपने 36 वर्ष के अध्यापन काल के दौरान 2 कहानी-संग्रहों, 3 सम्पादित ग्रंथों
और 16 शोध-ग्रंथों की रचना के दौरान आधुनिक समाज के परिप्रेक्ष्य में नारी की युगीन स्थिति को रेखांकित किया है।
प्रस्तुत शोध पत्र में 'स्वप्नदाह, निर्णय, एक और छिन्नमस्ता, पाँव तले की जमीन' कहानियों के माध्यम से नारी विमर्श के
विभिन्न पहलुओं का उद्घाटन करने का प्रयास किया गया है।

71

Annexure VII (A) III (A) (Page-...)

औरतों के शोषण के चक्रव्यूह में फंसी निम्न वर्ग की स्त्री की दयनीय अवस्था का यथार्थ अंकन अपनी कहानियों में किया है। 'स्वप्नदाह' कहानी में भ्रष्ट तन्त्र से जूझ रही स्त्री की मनोव्यथा रेखांकित है। प्रस्तुत कहानी में छिंदो द्वारा निम्न वर्ग की औरत का प्रतिनिधित्व करती है जो दिन-रात के कठिन परिश्रम के पश्चात रोजी-रोटी की जुगाड़ करती है और पाँच मरले की जमीन मिलने के सुखद भविष्य के स्वप्न देखती है जो भ्रष्ट सरकारी तंत्र और परिस्थितियां पूरे नहीं होने देते। छिंदो के अनुसार, "पिछली बार जब छः सौ रुपये इकट्ठे करके वह सब्जी बनाने का कुक्कर लेने की सोच रही थी, तब हेमा का डैडी एक दिन अच्छा-भला काम से आया और खाँसते-खाँसते हाँफ गया। कुछ खून के धब्बे भी थे। ...... उसे अस्पताल ले जाया गया। दो दिन तो टेस्ट ही होते रहे और पता चला कि टी. बी. है। .....छह सौ संभाले थे और छः हजार लग गये।" उसकी बेटी हेमा के पांव ठोस जमीन पर टिके है। वह दसवी पास होकर भी स्कूल में अध्यापिका बनकर 200 रुपये कमाने की अपेक्षा घरों में काम करके एक हजार रुपया महीना कमाकर घर की आर्थिक तंगी दूर करने में विश्वास रखती है। "अपने अस्तित्व के प्रति पूर्ण सजग युवती। न उसे बहकाया जा सकता है, न गुमराह किया जा सकता है, न उसका शोषण किया जा सकता है।" वह ठोस यथार्थ की धरती पर खड़ी है। छिंदो अपनी बेटी के दहेज बनाने के लिए हेमा के घरों के पैसे अलग जमा करती है। हेमा की शादी के पश्चात् वह पैसे जोड़कर नया मकान बनाना चाहती है।

इधर गाँव में एक समाचार फैलने लगा कि "जिन लोगों को गाँव में रहते हुए दस वर्ष से अधिक हो गए है उन्हें पाँच-पाँच मरले जमीन मिलेगी। छिंदो तो यहाँ बाद में आई, किन्तु उसकी सास यहाँ पिछले पैंतीस वर्षो से रह रही थी, सरपंच ने बाईपास के साथ वाली जमीन दिलाने का वायदा किया था। बस अब सबके सुख भरे दिन आने ही वाले थे। न रिक्शा चलाओ, न तपेदिक, हो। न आँधी-पानी, धूप-गर्मी में कोठियों में काम करने जाओ। बस सड़क के किनारे की जमीन मिल जाये तो सबसे पहले छिंदो दुकान खोलेगी-राशन पानी की।"[4] छिंदो की सास और उसका पति सरपंच की बेटी की शादी में खूब काम करते है परन्तु भ्रष्ट सरपंच अन्त में अपने ही नाते-रिश्तेदारों को जमीन दिलवा देता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में निम्न वर्ग की छिंदो के सुखद भविष्य के स्वप्नदाह के साथ ही उसकी आकाक्षांओं का गला घुट जाने का असहनीय दर्द अभिव्यंजित है।

'पाँव तले की जमीन' में [illegible] से सम्बन्धित सुधी आधुनिक नारी के महत्वाकांक्षी रूप का प्रतिनिधित्व करती है जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर के स्वतंत्र और पारिवारिक जीवन में कुछ कर गुजरने की इच्छा से सराबोर है। चाहती है कि नारी को स्वाभिमान से जीने के लिए आत्मनिर्भर बनना जरूरी है। आत्मनिर्भर होकर नारी स्वतंत्र रूप से जिन्दगी बिता सकती है। सुधी इस बात से भलीभांति परिचित है। वह पी.एच.डी. करके किसी कॉलेज में दो-तीन वर्ष पढ़ाने लगती है और उसके पश्चात् विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करती है। गुणवान और विदुषी सुधी को बहुत से रिश्ते आते है परन्तु उसे कोई रिश्ता पसन्द नहीं आता है। "वह लेक्चरर से सीनियर लेक्चरर और फिर रीडर बनी।" विश्वविद्यालय में नये प्रोजेक्ट की तैयारी में ही उसे कब पाँच बज जाते उसे पता ही न चलता। "हर महीने किसी न किसी पत्रिका में अपना कोई न कोई आलेख देख, प्रशंसा के पत्र पा, वह और भी तन्मयता से काम में लीन हो जाती।"

सुधी समय के साथ-साथ बढ़ती आयु के चिन्ह अपने शरीर पर महसूस करने लगती है परन्तु उसने जैसे शादी नहीं करने का निश्चय कर रखा है। घरवालों द्वारा बहुत से रिश्ते देखे जाते है परन्तु सुधी को पैंतीस की आयु में भी कोई रिश्ता पसन्द नहीं आ रहा है। उसकी भाभियां भी मानो उसके रोब एवं दबदबे से छुटकारा पाने को छटपटाती है। अपनी बढ़ती आयु, भाभियों का बुरा व्यवहार, भाईयों की बेरुखी, पिता की चिन्ता के कारण वह शादी के लिए तैयार हो जाती है। सुधी की मध्यवित कस्बाई लड़के से शादी तय हो जाती है। भविष्य में अपनी घरेलू जिन्दगी के बारे में सोचकर वह घबरा जाती है। "बच्चों का शोर, खरीददारी का हंगामा, दूसरी वैवाहिक हलचले उसके पास से सिर झुकाए निकल जाती। न वह प्रसन्न है, न उदास। एक तटस्थ भाव उसे घेरे रहता। पैंतीस वर्षीय उपलब्धियों का त्याग भाव उसमें वैराग्य भर रहा था, उसे निहंग कर रहा था।"

विवाह के पश्चात् सुधी को ग्रामीण जीवन में असुविधा महसूस होने लगती है। अब उसे अपने मायके में मां, भाई-भाभी की यादें सताने लगती है। उसका पति अमन पत्नी की उपलब्धियों से आगे अपने आपको सिद्ध करना चाहता है। अतः वह दक्षिण में आगे की पढ़ाई के लिए एम.डी.एस. करने चला जाता है। सुधी अपनी ससुराल में अपनी बेअदब, बेकायदा, घमंडी, बेसलीका इत्यादि की

72

ISSN 2277-5587

Annexure CAT III (A) (Page-3 cont)

छवि से मुक्त होने के लिये बेचैन हो जाती है और वह विश्वविद्यालय में फ्लैट के लिये आवेदन देकर अपना अगला प्रोजेक्ट पूरा करने के बारे में निश्चय करती है। सुधी की यातनाओं की शुरुआत तब होती है जब एम.डी. एस. करके अमन कुमार वापिस आते है। ''डॉ॰ अमन हर सुबह–शाम दलान में, कमरे में, छत पर सौ–सौ रंग दिखाने लगे। अमन के अंदर के सौ–सौ कम्पलैक्स उभरने लगे थे।''[8] सुधी अपने पति के बदले रूप को देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है। ''सुधी सोचती जिन्दगी के खुले रंग देखने के बाद क्या जीवन का अवसान काले रंग में ही होना था। ..... शादी के बाद पांव तले की ज़मीन की पुनः तलाश होती है, यह सुधी ने अब जाना।''[9]

'निर्णय' कहानी में जहाँ पुरुष का धूर्त रूप प्रस्तुत है, वहीं
नारी के साथ हुए अन्याय से लेकर उसके अशक्त से
शक्त बनने की यात्रा चिन्हित है। प्रस्तुत कहानी में
मध्यवर्गीय पुरुष के अन्यायी और धूर्त रूप के पहलू का
उद्घाटन करता 'विभु' परिवार के कर्त्ता–धर्त्ता के रूप में
प्रस्तुत है। ''बड़े भाई रघु को उसने पागल करार दे रखा
था और उसकी मरने वाली पत्नी को दिल की रोगिणी।''[10]
उसकी पहली मरने वाली पत्नी के बारे में कहा जाता है,
''विभु ने दिन पत्नी को तैयार किया और पहला फोन
रो–रोकर उसी ने मरने वाली के मायके किया।
कहा–शायद दिल का दौरा पड़ा था। न डॉक्टर बुलाया जा
सका, न रोग–उपचार। बस चली गई बड़ी भाभी। मायके
से किसी के भी आने से पहले अर्थी को शमशान घाट ले
जा आग दी चुकी थी। यह मृत्यु आज भी रहस्य है।''[11]
खु एक मध्यवर्गीय परिवार को तेरह हजार की मदद देकर
अपनी भाई की दूसरी शादी पलक से करवा देता है। बड़े
घर की वहू बनने का सपना लेकर आई पलक ससुराल में
आकर देखती है कि उससे बीस वर्ष बड़ा देवर उसके
विरुद्ध खड़ा है। उसने दोनों सौतेले बच्चे अपने वश में रखे
है। विवाह के पश्चात् खुशी के खूबसूरत सपने संजोकर
आई पलक का ससुराल में जिन्दगी के बदसूरत पक्ष से
परिचय होता है। आरम्भ में घुटकती, सिसकती इस
जिन्दगी से छुटकारा पाने के लिए वह आत्महत्या जैसे
घिनौने त्य के बारे में सोचने लगती है। ''पगलाया रघु
कभी भी मारपीट आरम्भ कर देता। ऐसे ही उसे रिब
फेक्चर झेलना पड़ा था। .....खाना खाते–खाते अचानक
वह कटोरियां फेंककर अपने पुरुष होने का प्रभुत्व
दिखाता। .....अचेतन के लौह–किवाड़ों पर एक ही
गूंज–अनुगूंज बनकर बार–बार टकराती–मुक्ति
चाहिए।''

रघु की मौत के पश्चात् विभा के चरित्र का दूसरा उज्जवल
पक्ष नारी राशक्तिकरण का दैदीप्यमान होता है। वह
वर्कशाप के दो हिस्सों में से एक हिस्सा रघु के दोनों बच्चों
और दूसरा हिस्सा अपने लिए रख लेती है। वह विभु के
हेरफेर के इरादे को भी नाकामयाब कर देती है। पलक
विवाह के नाम पर दी गई आहुति से छटपटाती हुई दमघोटू
जीवन से मुक्ति का रास्ता ढूँढ निकालती है और
हिसाब–किताब देखने के लिए नियुक्त किए मुंशीनुमा
युवक से सान्निध्य बढ़ने पर शादी कर लेती है। इस प्रकार
वह विभु के मुंह पर करारा तमाचा मारकर अपनी मुक्ति
की सार्वजनिक घोषणा करती है। ''अब वह अट्ठारह वर्ष
की टीनएजर नहीं, पच्चीस वर्षीय विवेकशील युवती थी
जो दूसरों द्वारा लिए निर्णयों से मुक्त हो चुनाव करना
जान गई थी। घिसटने की नियति अपनाने से उसने
इन्कार कर दिया था।''

'एक और छिन्नमस्ता' कहानी अपने परिवार से मिले
अपमान का घूंट पीती एक मां की कहानी है। आज हर
तीसरी गृहस्वामिनी कही जीने वाली नारी की यही
कहानी हैं। ''पति की निरंकुशता को, गालियों की गर्द
को, मेहमानों की उपस्थिति से मिलने वाले अपमान को,
इन्हीं बच्चों के प्यार से झाड़–बुहार वह नित्य ताजा दम
रहती।''[14] बोल्ड बहू के आने पर उसे बुढ़िया की उपाधि
ओढ़नी पड़ती है। ''उसने सब छोड़ दिया। टी.वी. के एम.
वी. एफ. चैनल को, थियेटर मूवी को, किटी पार्टी–ब्यूटी
पार्लर को।''[15] जैसे कि अन्य वृद्धाएं करती है उन्हीं के
अनुकरण पर वह बाबाओं के आश्रम की कीर्तन सभाओं
में मन की शांति खोजने लगी। पर ''जल्दी ही वह जान
गई कि इन बाबाओं की उत्कृष्टता का रहस्य वही है जो
उसके अपने घर–परिवार का–पति–पुत्र– बहू का यानी
मैटिरियलिज्म।''[16] पति के छल का शिकार वह घर में ही
असुरक्षित और अकेलेपन का संत्रास झेलती जीवन जीने
को विवश प्रतीत होती है।

छोटे बेटे सैनिक आदित्य के प्रेम विवाह के पश्चात् वह
उनकी गृहस्थी बसाने में पूर्ण योगदान देती है। आदित्य
की पोस्टिंग बदलने तथा अणिमा के मायके जाने के बाद
वह बेटी के ससुराल में अस्थायी आश्रय की खोज में जाती
है परन्तु बेटी के परिवार के हिस्से में आये एक ही कमरे में
रहने में उसे चार–छः दिनों में ही असहज महसूस होने
लगता है और वह वापिस अपमानित व रूखा व्यवहार

Annexure XII (A) III (A) Page-Blot

करने वाले पति-पुत्र के पास लौट आती है।

कारगिल युद्ध के समय टी.वी. स्क्रीन पर दर्जनों शहीद सैनिकों और भारतीय सेना की विभिन्न क्षेत्रों से घुसपैठियों को खदेड़ने की सफलता की खबरों में व्यस्त रहने लगती है। एक दिन वह टी.वी. पर ही देश के लिये बलिदान देने वाले अपने बेटे के शहीद होने की खबर सुनती है।

''हिमालय की ऊंचाईयों पर पन्द्रह शत्रुओं को मारने, एक पोस्ट पर पुनर्विजय प्राप्त करने के बाद अपने रक्त से स्वतन्त्रता का महाकाव्य लिखते हुए देश के वैभव के लिये आदित्य शहीद हुआ है, उसे गम करना चाहिए या गौरव, इस द्वन्द्व से मुक्त होने से पहले ही एक नई स्थिति उत्पन्न हो गई।''[11]

शहीद बेटे की पत्नी अणिमा को ससुराल में सास के अलावा किसी अन्य रिश्तेदार की सहानुभूति नहीं मिलती है। ''घर में ससुर, ज्येष्ठ, जेठानी सब उसे अवांछित प्राणी की तरह देख रहे थे।''[12] सब उसे आदित्य की वारिस के रूप में स्वीकार नहीं करते है और वह खुद ही आदित्य की संपत्ति को हड़पना चाहते है। ''बाप-बेटे ने मानवता की नियंत्रण रेखा के इस पार षडयन्त्रकारी घुसपैठ शुरु कर दी। ....अब वे इसी ताक में थे कि कुछ महीने पहले आकर आदित्य की वारिस बनने वाली अणिमा को कैसे दूध की मक्खी की तरह निकाला जाए। क्या वे प्रमाणित करें कि आदित्य अणिमा के सम्बन्ध ठीक नहीं थे? क्या वे घोर वेदना में खाई अणिमा से धोखे से सब हस्ताक्षर करवा लें? क्या वे वकील करके मौके का फायदा उठाएं?''[13]

परन्तु अणिमा की सास को यह मंजूर नहीं है। उसने निश्चय किया कि वह अपनी भोली बहू के साथ अन्याय नहीं होने देगी, चाहे उसे पति-पुत्र के विरुद्ध ही क्यों न जाना पड़े। ''लगा आज उसे छिन्नमस्ता बनना ही होगा। महाशक्ति बन कलुष का नाश करना ही होगा। भले ही उसे अपना गला काटकर उसी से निकली रक्तधारा को चाटना पड़े।''[14] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाली स्त्री के सशक्त रूप का चित्रण है।

लेखिका की उपरोक्त कहानियां नारी उत्पीड़न की न होकर नारी सशक्तिकरण की है। इसमें जीवन संघर्ष और उपलब्धियों का साकारात्मक रूप उभर कर आया है। प्रस्तुत कहानियां आज की उस स्त्री का स्वर है जिसे हर हालात में आगे ही देखना है, लक्ष्य को पाना है, हर कदम पर विषमताएं मिलती है, विपरीत परिस्थितियां मिलती है, ओढ़ना और खान-पान, उसका ... उसके मनोबल को पल-पल पराजय करने के लिए षड़यंत्र रचे जाते है किन्तु इन कहानियों की स्त्री के पास दृढ़ विश्वास है और आत्मिक शक्ति भी। उसके जिजीविषा होने को उसने नियति बना लिया है। सड़े-गले रीति रिवाज उसके लिए व्यर्थ है। अपने निर्णय लेना उसे आता है और यही उसकी शक्ति है, जीवन है, चेतना है। इन कहानियों में समाया दर्शन पाश्चात्य नारी विमर्श की देन नहीं है। यहां सजग आत्म चेता, अत्याधुनिक, बौद्धिक, शिक्षित भारतीय स्त्री का मनोविज्ञान, संघर्ष और विजय यात्रा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. मालती के.एम., स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य (नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन), प्रथम संस्करण, 2010 (भूमिका से)
2. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, स्वच्छन्द, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 63
3. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, स्वच्छन्द, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 64
4. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, स्वच्छन्द, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 66
5. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, पांव तले की जमीन, .दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 89
6. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, पांव तले की जमीन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 83
7. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, पांव तले की जमीन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 93
8. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, पांव तले की जमीन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 92
9. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, पांव तले की जमीन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 92
10. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, विमर्श, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 84
11. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, विमर्श, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 84
12. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, विमर्श, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 86
13. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, विमर्श, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 87
14. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 93

ISSN 2277-5587

74

Annexure VII (A) III (A) (Page-7) Contd

15. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 93
16. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 93
17. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 96
18. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 96
19. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 96
20. डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, एक और छिन्नमस्ता, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 96

75

Deepti